"अटल बिहारी वाजपेयी के प्रधानमंत्री के रूप में उनके कार्यकाल का विश्लेषणात्मक अध्ययन"

अनुराधा
असिस्टेंट प्रोफेसर (राजनीति विज्ञान)
कमला आर्य कन्या पी0 जी0 कॉलेज ,मिर्जापुर

सार

वर्तमान भारत के लोकतांत्रिक शासन प्रणाली प्रचलित है जिसमें संविधान के द्वारा न सिर्फ शासक के बल्कि प्रजा के भी अधिकार और दायित्व एवं कर्तव्यों का निर्धारण किया गया है संविधान के द्वारा शासन का वास्तविक प्रधान तथा जनता के प्रति जवाबदेही प्रधानमंत्री को बनाया गया है इस गरिमामई तथा चुनौतीपूर्ण पद को अनेक महान विभूतियों ने सुशोभित किया है जिनमें से एक नाम अटल बिहारी वाजपेई का भी है वाजपेई जी यूं तो भारतीय राजनीति के पटल पर एक ऐसा नाम है जिन्होंने अपने व्यक्तित्व एवं कृतित्व से न केवल व्यापक स्वीकार्यता और सम्मान हासिल किया बल्कि तमाम बाधाओं को पार करते हुए 90 के दशक में भाजपा को स्थापित करने में भी अहम भूमिका निभाई यह बाजपेई जी के व्यक्तित्व का ही कमाल था कि भाजपा के साथ उस समय नहीं सहयोगी दल जुड़ते गए भारत की राष्ट्रभाषा हिंदी का अपना ही अलग महत्व और इतिहास है अगर किसी ने हिंदी को प्रचारित और प्रसारित करने और इसके प्रति दुनिया का ध्यान आकर्षित करने के लिए सबसे ज्यादा काम किया है वह देश के पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपईस वाजपेई जी का संसदीय अनुभव पांच दशकों से भी ज्यादा का विस्तार लिए हुए हैं।

कीवर्ड्स– लोकतांत्रिक, जवाबदेही, संविधान, भारतीय राजनीति, राष्टभाषा, अंतर्राष्ट्रीय दबाव और परमाणु परीक्षण आदि।

प्रस्तावना

वाजपेई जी प्राचीन ग्रंथों में पूर्णता आस्था रखने वाले भारतीय संविधान के उद्देश्यों का हित साधन करने हेतु सदैव प्रयासरत रहें वाजपेई जी विदेश मंत्रालय जैसे महत्वपूर्ण पद को सुशोभित करने के साथ–साथ भारत के तीन बार

प्रधानमंत्री बनने वाले व्यक्ति हैं जिन्होंने अपने प्रधानमंत्री कार्यकाल में देश और जनता के हित के लिए अनेक कार्य किए योजनाएं और नीतियां बनाई जिनके लिए उन्हें हमेशा याद किया जाता रहेगा वाजपेई जी देश के उन चंद प्रधान मंत्रियों में से एक थे जिन्हें हमेशा उनके विभाग फैसलों के लिए जाना जाता है चाहे वह पाकिस्तान से दोस्ती के लिए बस से लाहौर जाने की हो या फिर कारगिल में लड़ाई लड़ने के फैसले की हो अनेक अंतरराष्ट्रीय दबाव के बाद भी उन्होंने पोखरण में परमाणु परीक्षण करवाया और भारत को एक परमाणु शक्ति संपन्न देश बनाया वाजपेई जी ने पत्रकारिता के क्षेत्र में विशिष्ट ख्याति प्राप्त की और अनेक पुस्तकों और कविताओं की रचना की है यहां तक कि पंडित जवाहरलाल नेहरु जी ने भविष्यवाणी करते हुए यह कह दिया था कि 1 दिन अटल बिहारी वाजपेई भारत के प्रधानमंत्री होंगे यही कारण है कि अटल बिहारी वाजपेई जी के प्रधानमंत्री कार्यकाल को मेरे द्वारा अपने शोध के एक विषय के रूप में चुना गया है इस शोध के माध्यम से उनके कार्यकाल के दौरान भारतीय राजनीति में आने वाले मॉडल बदलाव तथा भारत के पड़ोसी देशों के साथ वैश्विक संबंधों तथा बाजपेई जी के कार्यकाल के महत्वपूर्ण उपलब्धियों का विश्लेषण किया गया है साथ ही उनके द्वारा किए गए कार्यों का आलोचनात्मक अध्ययन भी मेरे द्वारा किया गया है।

अटल बिहारी वाजपेई का व्यक्तिगत परिचय – वाजपेई जी का जन्म 25 दिसंबर 1924 में मध्यप्रदेश के ग्वालियर के एक छोटे से गांव में हुआ था साधन परिवार में जन्मे अटल जी के पिता कृष्ण बिहारी वाजपेई अध्यापक थे और साथ ही रे महान कवि भी थे जिसके चलते वाजपेई जी को कविता का गुण विरासत में अपने पिता से मिला था आप वाजपेई जी की प्रारंभिक शिक्षा ग्वालियर के हीरो या लक्ष्मीबाई कॉलेज और कानपुर के डीएवी कॉलेज में हुई थी वाजपेई जी ने राजनीति विज्ञान में उं. किया था वाजपेई जी छात्र जीवन से राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सदस्य बने और तभी से राष्ट्रीय स्तर कि वाद–विवाद प्रतियोगिताओं में भाग लेते रहे तीन बार भारत के प्रधानमंत्री रहे वाजपेई जी का 16 अगस्त 2018 को दिल्ली के एम्स में निधन हो गया था साल 2015 में उन्हें भारत के सर्वोच्च नागरिक सम्मान भारत रत्न से भी सम्मानित किया गया था

अटल बिहारी वाजपेई का राजनीतिक सफर – वाजपेई जी ने अपने राजनीतिक जीवन की शुरुआत 1942 में उस समय की थी जब भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान उनके भाई 23 दिनों के लिए जेल चले गए थे सन 1991 राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सहयोग से भारतीय जनसंघ पार्टी का गठन हुआ था उस दौरान वाजपेई जी की भूमिका श्यामा प्रसाद मुखर्जी जैसे नेताओं के साथ रही वाजपेई जी 1968 से 1973 तक भारतीय जनसंघ पार्टी के अध्यक्ष रहे

वाजपेई जी ने 1955 में पहली बार लोकसभा चुनाव लड़ा लेकिन उन्हें इन चुनाव में सफलता हासिल नहीं हुई 1957 में वाजपेई को जन संघ ने उत्तर प्रदेश के लखनऊ मथुरा बलरामपुर से लड़ाया गया लेकिन भीम लखनऊ और मथुरा से चुनाव हार गए थे और बलरामपुर सीट से चुनाव जीतकर लोकसभा में पहुंचे।

वाजपेई जी मोरारजी देसाई की सरकार में सन 1977 से 1979 तक विदेश मंत्री रहे और विदेशों में भारत की छवि बनाई विदेश मंत्री के पद पर रहते हुए वाजपेई जी ने संयुक्त राष्ट्र संघ में अपना पहला भाषण हिंदी में दिया था जिसमें उन्होंने सभी के दिल में हिंदी के लिए गहरा प्रभाव छोड़ दिया था–' टूटे हुए सपनों की सुने कौन सिसकी

अंतर को सुन व्यथा पलकों पर ठिठकी

हार नहीं मानूंगा

रार नहीं ठानूंगा

काल के कपाल पर लिखता और मिटाता हूं

गीत नया गाता हूं...'

बाजपेई जी का यह भाषण सभी यूएन में आए प्रतिनिधियों को इतना पसंद आया कि उन्होंने खड़े होकर वाजपेई जी के लिए तालियां बजाई थी।

1980 में वाजपेई जी ने जनता पार्टी से नाखुश होकर भारतीय जनता पार्टी भाजपा की स्थापना की वाजपेई जी 6 अप्रैल 1980 को भाजपा के अध्यक्ष बने वाजपेई जी राज्यसभा के लिए भी निर्वाचित हुए बाजपेई जी ने प्रथम बार प्रधानमंत्री के रूप में 16 मई से 1 जून तक 1996 में देश की बागडोर संभाली हालांकि 13 दिनों में पूर्ण बहुमत हासिल न करने के चलते उनकी सरकार गिर गई 1998 में दोबारा लोकसभा चुनाव हुए जिसमें बीजेपी को ज्यादा सीट मिली और कुछ अन्य पार्टी के सहयोग से वाजपेई ने एनडीए का गठन किया और वे फिर प्रधानमंत्री बने यह सरकार 13 महीने तक चली क्योंकि बीच में ही जयललिता की पार्टी ने सरकार का साथ छोड़ दिया था जिसके चलते सरकार गिर गई 1999 में हुए लोकसभा चुनाव में भाजपा फिर से सत्ता में आई और इस बार वाजपेई जी ने अपना कार्यकाल पूरा किया 2004 से अटल जी ने शारीरिक अस्वस्थता के कारण सक्रिय राजनीति से संन्यास ले लिया और 16 अगस्त 2018 को दिल्ली में उनका निधन हो गया।

अटल बिहारी वाजपेई जी की रचनाए ं– मृत्यु या हत्या, रग रग हिंदू मेरा परिचय, कैदी कविराय की कुंडलियां, संसद में तीन दशक, मेरी इक्यावन कविताएं ,कुछ लेख कुछ भाषण और सेक्युलर वाद आदि

अटल बिहारी वाजपेई के प्रधानमंत्री के रूप में किए गए महत्वपूर्ण कार्य योजनाएं एवं नीतियां –

1– निजीकरण को बढ़ावा विनिवेश की शुरुआत – वाजपेई जी ने अपने कार्यकाल में देश में निजी करण को उस रफ्तार तक बढ़ाया जहां से वापसी की कोई गुंजाइश नहीं बची वाजपेई जी की इस रणनीति के बीच एक और परेड समूह की बीजेपी से शायद सांठगांठ रही होगी वाजपेई जी ने 1999 में एक विनिवेश मंत्रालय का गठन किया इसके मंत्री अरुण शौरी बनाए गए थे वाजपेई के नेतृत्व में भारत एल्युमिनियम कंपनी हिंदुस्तान जिंक इंडियन पेट्रोकेमिकल्स कॉरपोरेशन लिमिटेड और विदेश संचार निगम लिमिटेड जैसी सरकारी कंपनियों को बेचने की प्रक्रिया शुरू की थी इतना ही नहीं वाजपेई जैसे पहले देश में बीमा का क्षेत्र सरकारी कंपनियों के हवाले ही था लेकिन वाजपेई सरकार ने इस में विदेशी निवेश के रास्ते खोले उन्होंने बीमा कंपनियों में विदेशी निवेश की सीमा को 26 फीसदी तक किया था इन कंपनियों में निजी करण से नियुक्तियों में आरक्षण की बाध्यता खत्म हो गई वाजपेई जी के निजीकरण को बढ़ावा देने वाले इस कदम की आज भी खूब आलोचना होती है क्योंकि निजी करण से कंपनियों ने मुनाफे को ही अपना उद्देश्य बना लिया हालांकि बाजार के दखल की हरकारे लगाने वालों के लिए इससे लोगों को बेहतर सुविधाएं मिलनी शुरू हुई थी लेकिन इन सेक्टर में काम करने वालों के लिए यह बदलाव मुफीद नहीं रहा ।

2– पोखरण का परमाणु परीक्षण – 11 मई 13 मई 1998 में भारत ने 1974 के बाद दूसरा परमाणु परीक्षण किया था वाजपेई सरकार द्वारा यह परीक्षण इसलिए किया गया क्योंकि वह भारत को सुरक्षा की दृष्टि से और अधिक मजबूत करना चाहती थी पोकरण में पांच भूमिगत परमाणु परीक्षण विस्फोट किए गए थे दुनिया के कई संपन्न देशों के विरोध के बावजूद अटल सरकार ने इस परीक्षण को अंजाम दिया जिसके बाद अमेरिका कनाडा जापान और यूरोपियन यूनियन समेत कई देशों ने भारत पर कई तरह की रोक लगा दी थी इसके बावजूद भी अटल सरकार ने जीडीपी में बढ़ोतरी की पोखरण का परीक्षण बाजपेई के सबसे बड़े फैसलों में से एक है ।

3– सर्व शिक्षा अभियान– 6 से 14 साल के बच्चों को मुफ्त शिक्षा देने का अभियान वाजपेई के कार्यकाल में ही शुरू किया गया था सन 2000 और 2001 में उन्होंने यह स्कीम लागू की थी जिसके चलते बीच में पढ़ाई छोड़ देने वाले

बच्चों की संख्या में कमी दर्ज की गई 2000 में जहां 40 फीसदी बच्चे ड्रॉपआउट होते थे उनकी संख्या 2005 तक आते–आते 10 श्री सिद्धि के आसपास आ गई थी इस मिशन से वाजपेई जी के लगाओ का अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि उन्होंने इस स्कीम को प्रमोट करने वाली थीम लाइन स्कूल चले हम खुद लिखी थी ।

4– संचार क्रांति का दूसरा चरण – भारत में संचार क्रांति का जनक भले ही राजीव गांधी और उनके नियुक्त किए गए सैम पित्रोदा को माना जाता हो लेकिन उसे आम लोगों तक पहुंचाने का काम वाजपेई सरकार ने ही किया था 1999 में वाजपेई ने भारत संचार निगम लिमिटेड बी एस एन एल के एकाधिकार को खत्म करते हुए नई टेलीकॉम नीति लागू की इसके पीछे प्रमोद महाजन का दिमाग भी बताया गया रेवेन्यू शेयरिंग मॉडल के जरिए लोगों को सस्ती दरों पर फोन कॉल करने के फायदे मिले बाद में सस्ती मोबाइल फोन का दौर शुरू हुआ

4– भारत की जीडीपी ग्रोथ में बढ़ोतरी – वाजपेई जी ने आर्थिक सुधारों को पेश किया वह भारत को नई ऊंचाइयों पर ले गए 1998 से 2000 तक का उनके कार्यकाल में भारत की जीडीपी ग्रोथ की बढ़ोतरी 8 फीसदी तक हुई महंगाई दर 4 फीसदी से कम और विदेशी मुद्रा भंडार पूरी तरह से भरे रहे हालांकि उनके कार्यकाल के दौरान भारत को भूकंप 2000–1, दो चक्रवात 1999 और 2000 , एक भयानक सूखा 2,002–2003 , तेल संकट 2003 , कारगिल संघर्ष 1999 और संसद हमला 2001 सहित आपदा जनक घटनाओं का सामना करना पड़ा था फिर भी उन्होंने एक इस पर अर्थव्यवस्था बनाए रखी थी जिस कारण उनकी पार्टी बीजेपी को वास्तविक आर्थिक अधिकार रखने वाली पार्टी की छवि मिली साथ ही भारत आर्थिक प्रगति की तरह बड़ा

5– स्वर्णिम चतुर्भुज और ग्राम सड़क योजना – अटल जी की सबसे बड़ी उपलब्धियों में महत्वकांक्षी सड़क परियोजना है जिसे उन्होंने लांच किया था इसमें स्वर्णिम चतुर्भुज और प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना शामिल है स्वर्णिम चतुर्भुज योजना में चेन्नई कोलकाता दिल्ली और मुंबई को हाईवे नेटवर्क से जोड़ा वहीं प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना के जरिए गांवों को पक्की सड़कों के जरिए शहर से जोड़ा गया अटल जी ने भारत के चारों कोनों को सड़क मार्ग से जोड़ने के लिए सड़क मार्गों के विस्तार हेतु स्वर्णिम चतुर्भुज परियोजना को प्रारंभ किया था उनके कार्यकाल में भारत में इतनी सड़कों का निर्माण हुआ जितनी शेरशाह सूरी के शासनकाल में हुआ था ।

6– चंद्रयान –1 परियोजना – वाजपेई जी ने चंद्रयान –1 परियोजना पारीक की भारत के 56 में स्वतंत्रता दिवस पर उन्होंने कहा हमारा देश अभिमान की क्षेत्र में उच्च उड़ान भरने के लिए तैयार है मुझे यह घोषणा करने में प्रसन्नता हो रही है कि भारत 2008 तक चंद्रमा के लिए अपना स्वयं का अंतरिक्ष यान भेज देगा इसे चंद्रयान नाम दिया जा रहा है ।

7– अंत्योदय अन्न योजना – देश के गरीबों के लिए वाजपेई सरकार की ओर से चलाई गई योजना थी अंत्योदय अन्न योजना ! 25 दिसंबर 2000 को वाजपेई के जन्मदिन पर इस योजना की शुरुआत की थी इस योजना के तहत गरीबों में भी ज्यादा गरीब लोगों को रियायती दर पर गेहूं और चावल उपलब्ध करवाना था इसके तहत एक करोड़ परिवारों को दो रुपए प्रति किलो दर से 35 किलो गेहूं और ₹3 प्रति किलो की दर पर चावल उपलब्ध करवाना था इसके बाद 2003 में इस योजना को बढ़ाया गया और 5000000 परिवार जोड़ दिए गए 2004 में योजना एक बार फिर से बढ़ाई गई और फिर से 50 लाख परिवारों को जोड़ा गया कुल मिलाकर इस योजना के तहत 20000000 परिवारों को सस्ते कीमत पर राशन मुहैया करवाया था इन दो करोड़ परिवारों की पहचान करने के लिए वाजपेई सरकार ने पूरे देश में व्यापक स्तर पर सर्वे करवाई थी और उनके लिए राशन कार्ड बनवाए थे ।

8– नई विभागों का गठन – वाजपेई जी को जनजातीय मामलों के मंत्रालय उत्तर पूर्व क्षेत्र विभाग और सामाजिक कल्याण मंत्रालय को सामाजिक न्याय मंत्रालय में परिवर्तित करने के लिए नई विभागों के निर्माण के लिए भी श्रेय दिया जाता है यह भी देश के पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेई की उपलब्धियां योगदान है जिसमें देश को एक नई दिशा मिली नई ऊंचाइयों पर पहुंचाया ।

वाजपेई सरकार की उपलब्धियों के अलावा उनके द्वारा किए गए कुछ ऐसे काम भी हैं जिनकी काफी आलोचना होती रही है –

9– पुरानी पेंशन योजना को खत्म करना – वाजपेई सरकार ने सांसदों और विधायकों को छोड़कर सभी सरकारी कर्मचारियों के लिए पेंशन की स्कीम को खत्म कर दिया था एक जनवरी 2004 से नई पेंशन व्यवस्था लागू होनी थी और पुरानी व्यवस्था को खत्म कर देना था इस बारे में सरकार का कहना था कि बढ़ते हुए और स्थानीय पेंशन बिल के कारण सरकार ने सिक्स पेंशन योजना की जगह नई पेंशन स्कीम अपनाने का सुविचार इत कदम उठाया

है इस बदलाव से सरकार को सीमित संसाधनों को अधिक उत्पादक और सामाजिक आर्थिक विकास में सहायता मिली है पेंशन कोई उत्पादक चीज नहीं है यह प्राइवेट कर देने से आप जो है सरकार ज्यादा उत्पादक कार्यों में अपना संसाधन लगा रही है ।

मेरा मानना है कि पूर्व में कर्मचारियों को उनकी तनख्वाह का कम से कम 50: हिस्सा प्रति महीना पेंशन के रूप में मिलता था मगर पुरानी पेंशन व्यवस्था खत्म होने से उनके बुढ़ापे का सहारा आर्थिक सुरक्षा खत्म हो गई है जब 40 साल तक सेवा करने के बाद भी कर्मचारियों का भविष्य सुरक्षित नहीं है तो यह दुर्भाग्यपूर्ण बात है मेरा मानना है केंद्र को पुरानी पेंशन व्यवस्था को फिर से बहाल कर देना चाहिए ।

10– लाहौर – आगरा समिति और कारगिल – कंधार की नाकामी – वाजपेई जी ने भारत और पाकिस्तान के आपसी रिश्तों को सुधारने के लिए फरवरी 1999 में दिल्ली लाहौर बस सेवा शुरू की थी पहली बस सेवा सेवा खुद लाहौर गए और पाकिस्तानी प्रधानमंत्री नवाज शरीफ के साथ मिलकर लाहौर दस्तावेज पर हस्ताक्षर किए यह कदम उन्होंने प्रधानमंत्री के तौर पर दूसरे कार्यकाल में किया था हालांकि इसके तुरंत बाद पाकिस्तान सैनिकों ने कारगिल में भारतीय सीमा में घुसपैठ कर ली इसके बाद पाकिस्तानी सैनिकों को उनकी जगह वापस पहुंचाने के लिए 2 महीने तक संघर्ष करना पड़ा इस संघर्ष में आधिकारिक आंकड़ों के मुताबिक भारत की तरफ से 50 से ज्यादा लोग मारे गए थे यह पहला मौका था जब पाकिस्तानी सैनिकों ने भारतीय सीमा के अंदर आकर आक्रमण किया था इसको लेकर वाजपेई जी की आलोचना भी होती रही ।

इसके बाद एक बड़ी घटना बाजपेई को कंधार हाईजैक मछली के दौरान भी मिली 24 दिसंबर को पाकिस्तान स्थित चरमपंथी संगठन हरकत उल मुजाहिदीन के लोगों ने आईसी 814 विमान का अपहरण कर लिया था काठमांडू से दिल्ली आ रहे इस विमान में 176 यात्री और चालक दल के 15 लोग सवार थे भारतीय सीमा में इस विमान का अपहरण कर लिया गया था और अपहरणकर्ता इस विमान को अफगानिस्तान के कंधार ले गए इन लोगों ने भारत सरकार से तीन चरमपंथी को रिहा करने की मांग की थी तब वाजपेई सरकार ने इन चरमपंथियों को रिहा कर दिया था यह कहा जाता रहा है कि वाजपेई सरकार ने आम लोगों की सुरक्षा को प्राथमिकता दी लेकिन इस घटना के बारे में खुफिया एजेंसियों ने कहा है कि इस मामले को ठीक ढंग से हैंडल नहीं किया गया था ।

11– पोटा कानून – वाजपेई जी के पूर्ण कार्यकाल का दौर था जब 13 दिसंबर 2001 को 5:00 जन्म पंछियों ने भारतीय संसद पर हमला कर दिया था यह भारतीय संसद इतिहास का सबसे काला दिन माना जाता है इस हमले में भारत के किसी नेता को कोई नुकसान नहीं पहुंचा था लेकिन पांचो चरमपंथियों और कई सुरक्षाकर्मी मारे गए थे इन सब को देखते हुए आंतरिक सुरक्षा के लिए सख्त कानून बनाने की मांग जोर पकड़ने लगी थी और वाजपेई सरकार ने पोटा कानून बनाया यह बेहद सख्त आतंकवाद विरोधी कानून था जिसे 1995 के टाडा कानून के मुकाबले बेहद कड़ा माना गया था हालांकि इस कानून के बनने के बाद ही इसको लेकर आलोचना का दौर शुरू हो गया कि इसके जरिए सरकार विरोधियों को निशाना बना रही हैं महज 2 साल के अंदर इस कानून के तहत 800 लोगों को गिरफ्तार कर लिया गया और करीब 4000 लोगों पर मुकदमा दर्ज किया गया तमिलनाडु के एमडीएमके नेता वाइको को भी कानून के तहत गिरफ्तार किया गया था मैं आज 2 साल में वाजपेई सरकार ने 32 संगठनों पर पोटा कानून के तहत पाबंदी लगाई 2004 में जब यूपीए सरकार सत्ता में आई तब यह कानून निरस्त कर दिया गया था।

12– संविधान समीक्षा आयोग का गठन – वाजपेई सरकार ने संविधान में संशोधन की जरूरत पर विचार करने के लिए फरवरी 2000 को संविधान समीक्षा के राष्ट्रीय आयोग का गठन किया था हालांकि ऐसी आयोग के गठन का विरोध विपक्षी दलों के अलावा तत्कालीन राष्ट्रपति आर के नारायणन ने भी किया था आर के नारायणन ने संविधान समीक्षा की जरूरत पर सवाल उठाते हुए कहा था कि जब संशोधन की व्यवस्था है ही तो भी समीक्षा क्यों होनी चाहिए लेकिन बाजपेई सरकार नहीं समीक्षा आयोग का गठन किया और आयोग को 6 महीने का वक्त दिया गया उस वक्त इस बात पर अंदेशा जताया गया था कि जिस सविधान को तैयार करने में 3 साल के करीब वक्त लगा उसकी समीक्षा महज छह महीनों में कैसे हो पाएगी सुप्रीम कोर्ट के भूतपूर्व न्यायाधीश एमएन वेंकटचलिया के अगुवाई वाले इस आयोग ने 249 सिफारिश की थी लेकिन इस आयोग और उनकी सिफारिशों का बड़े पैमाने पर विरोध हुआ था जिसके बाद वाजपेई सरकार सविधान को संशोधित करने के काम को आगे नहीं बढ़ा पाए ।

13– जातिवार जनगणना पर रोग – 1999 में वाजपेई सरकार के बनने से पहले एच डी देवगौड़ा सरकार ने जातिवार जनगणना कराने को मंजूरी दे दी थी जिसके चलते 2001 में जातिगत जनगणना होनी थी मंडल कमीशन के प्रावधानों को लागू करने के बाद देश में पहली बार जनगणना 2001 में होनी थी मंडल कमीशन के प्रावधानों को ठीक ढंग से लागू किया जा रहा है या नहीं इसे देखने के लिए जातिगत जनगणना कराए जाने की मांग जोर पकड़ रही थी ताकि कोई थोड़ा कार्यप्रणाली बनाई जा सके लेकिन वाजपेई सरकार ने इस फैसले को पलट दिया जिसके

चलते जातिवार जनगणना नहीं हो पाई इसको लेकर समाज का बहुजन तबका और उनके नेता वाजपेई जी की आलोचना करते रहे उनके मुताबिक वाजपेई जी के फैसले से आबादी के हिसाब से हक की मुहिम को धक्का पहुंचा है।

14– गुजरात दंगे – गुजरात में 2002 में हुए दंगों के दौरान 1 सप्ताह तक वाजपेई जी की चुप्पी को लेकर सबसे ज्यादा आलोचना होती रही है गोधरा कांड 26 फरवरी 2002 में शुरू हुआ था और वाजपेई जी का पहला बयान 3 मार्च 2002 को आया जब उन्होंने कहा कि गोधरा से अहमदाबाद तक जिस तरह से लोगों को जिंदा जलाया जा रहा है वह देश के माथे पर दाग है लेकिन वाजपेई जी ने इसे रोकने के लिए कोई ठोस कदम नहीं उठाया था एक महीने बाद अप्रैल 2002 को वाजपेई अहमदाबाद गए और वहां बाजपेई जी बोले भी तो केवल इतना ही कि मोदी को राजधर्म का पालन करना चाहिए हालांकि वे खुद राजधान का पालन क्यों नहीं कर पाए यह सवाल उठता रहा उन्होंने बाद में कई मौकों पर यह जाहिर भी किया यह मोदी गुजरात के मुख्यमंत्री के तौर पर इस्तीफा दे दें लेकिन नैटो नरेंद्र मोदी ने गुजरात के मुख्यमंत्री के पद से अपना इस्तीफा दिया और ना ही वाजपेई राजधान का पालन करते हुए उन्हें हटा पाए ।

अटल बिहारी वाजपेई की विदेश नीति – विदेश नीति के विशेषज्ञों की अगर मानें तो वर्ष 1947 में आजादी के बाद भारत की विदेश नीति का खाका पहले प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू ने खींचा था लेकिन अटल बिहारी वाजपेई ने इसकी बुलंद इमारत को खड़ी करने और उसे नई शक्ल देने में अपनी बड़ी भूमिका निभाई थी शीत युद्ध के पुराने खेलों से निकलकर अमेरिका इजरायल और पूर्वी एशिया से बेहतर रिश्तो तक भारतीय विदेश नीति को देश के 11वीं प्रधानमंत्री वाजपेई ने नई रफ्तार दी चीन से संबंध सुधारने और आतंकवाद के मसले पर पाकिस्तान को घेर कर जवाब दे बनाने के मामले में वाजपेई जी ने अपने शासनकाल में ही एक किला तैयार किया था 1998 में पोखरण में परमाणु विस्फोट कर बाजपेई ने वैश्विक स्तर पर भारत की ताकत का एहसास करा दिया था साथ ही पश्चिमी देशों के आर्थिक प्रतिबंधों के बावजूद हुए एक तेज रफ्तार विकास में भारतीय क्षमता का लोहा मनवाया वाजपेई जीने लुक ईस्ट नीति की न्यू लक जिसके तहत चीन के साथ रिश्ते सुधारने के अलावा आसियान देशों के साथ भारत के सक्रिय संपर्क और सहयोग की शुरुआत हुई बाजपेई सरकार ने तिब्बत को चीन का क्षेत्र माना तो चीन ने बदले में सिक्किम को भारत का राज्य के रूप में स्वीकार किया अमेरिका और इजरायल जैसे नई सहयोगी जुटाने और पुराने दोस्त रूस के साथ रणनीतिक साझीदारी की नींव रखने वाले अटल सरकार ही सोच थी पाकिस्तान से अमन दोस्ती

की लाहौर बस लेकर सरहद पार पहुंचने वाले बाजपेई थे तो विश्वासघाती कारगिल दुस्साहस के खिलाफ कड़ी कार्यवाही का फैसला लेने में भी उन्होंने हिचक नहीं दिखाई

वाजपेई जी ने राष्ट्र हित को ध्यान में रखते हुए जो विदेश नीति अपनाई उसके कारण विश्व में भारत को और अधिक सम्मान तथा गौरव की दृष्टि से देखा जाने लगा ।

निष्कर्ष – एक लंबे राजनीतिक जीवन में अटल जी भारत के कुछ गिने चुने नेताओं में शुमार है जिन्होंने सदैव संविधान के अनुरूप त्याग व संयम के साथ जीवन यापन किया है तथा अवैधानिक तरीकों से धन उपार्जन नहीं किया है आज का भ्रष्टाचार से लिप्त संपूर्ण समाज लूट का सूट में लगा हुआ है परंतु भारतीय राजनीति के आजीवन बेदाग रहने वाले इस महान व्यक्तित्व की कमी राजनीति में सदैव महसूस की जाती रहेगी अपने लगभग 6 वर्षों के कार्यकाल में तीन बार प्रधानमंत्री रहे वाजपेई जी ने भारत के प्रति अपने निस्वार्थ समर्पण और 50 से अधिक वर्षों तक देश और समाज की सेवा की यही वजह है कि राजनीतिक दल के रूप में पहली लोकसभा चुनाव में पार्टी के खाते में महज 2 सीटें ही आई थी इसके बावजूद वाजपेई जी ने हार नहीं मानी और उन्होंने कहा अंधेरा छटेगा सूरज निकलेगा कमल खिलेगा इसी का नतीजा है कि मौजूदा समय में केंद्र की सत्ता से लेकर देश की 20 राज्यों में बीजेपी की सरकारी हैं ।

वाजपेई जी ने आर्थिक मोर्चे पर कई ऐसे कदम उठाए जिनसे देश की दिशा बदल गई जीडीपी दर में कई फीसदी बढ़ी और महंगाई दर कई फीसदी कम हुई वाजपेई जी ने 1999 में भारत संचार निगम लिमिटेड बीएसएनएल के एकाधिकार को खत्म करते हुए नई टेलीकॉम नीति लागू की जिसे सस्ती दरों पर फोन कॉल करने का फायदा मिला बाद में सस्ती मोबाइल फोन का दौर भी शुरू हो गया इसके अलावा बाजपेई जी ने बिजनेस और उद्योग में सरकार की भूमिका को कम कर निजीकरण को बढ़ावा देने का प्रयास किया उनके द्वारा चलाए गए स्वर्णिम चतुर्भुज और प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना के द्वारा उन्होंने सड़कों के माध्यम से भारत को जोड़ने की योजना बनाई वाजपेई सरकार द्वारा अन्य महत्वपूर्ण योगदान थी सर्व शिक्षा अभियान जिसके द्वारा 4 सालों के अंदर ही स्कूल छोड़ने वाले बच्चों की संख्या 60: तक की गिरावट देखी गई वाजपेई जी के कुछ अन्य महत्वपूर्ण काम भी है जैसे चंद्रयान–1 परियोजना , अंत्योदय अन्न योजना आदि इन सभी बड़ी उपलब्धियों के बाद भी वाजपेई जी के कार्यकाल के दौरान कई ऐसी घटनाएं भी हुई जिनके लिए वाजपेई जी की आलोचना होती रही थी जैसे 2002 में हुए गुजरात दंगे स 26 फरवरी 2002 में हुए गुजरात दंगों के दौरान 1 सप्ताह तक वाजपेई जी की चुप्पी को लेकर लेकर तथा वाजपेई

जी के द्वारा कोई बड़ा कदम ना उठाया जाने से वाजपेई जी को कई आलोचनाओं का सामना करना पड़ा इसके अलावा विवादास्पद पुरानी पेंशन योजना को खत्म करना जिसमें वाजपेई सरकार ने सांसद और विधायकों को छोड़कर सभी सरकारी कर्मचारियों को मिलने वाली पेंशन स्कीम को खत्म कर दिया था पुरानी पेंशन खत्म होने से लोगों के बुढ़ापे का सहारा उनकी आर्थिक सुरक्षा खत्म हो गई और जातिवार जनगणना पर रोक भी बाजपेई सरकार को काफी आलोचना का सामना करना पड़ा इसके अलावा पोटा कानून आईसी 814 विमान का अपहरण कारगिल युद्ध आदि घटनाओं के लिए भी वाजपेई जी को काफी ऑल आलोचनाओं का सामना करना पड़ा मेरे इस शोध में वाजपेई जी द्वारा किए गए अपने कार्यकाल के दौरान कामों का विश्लेषण और मूल्यांकन किया गया है ।

अध्ययन से संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन – किसी भी शोधार्थी को अपनी समस्या के चयन परिकल्पना निर्माण में अध्यन की रूपरेखा तैयार करने के लिए ओसाधारों की आवश्यकता होती है यह ठोस आधार पुस्तकों पत्र–पत्रिकाओं लेखों पूर्व में संपन्न हुए शोध परिणामों से प्राप्त होता है इसके लिए शोधार्थी को साहित्य के सर्वेक्षण की आवश्यकता पड़ती है जो निम्नलिखित है –

1– डॉ निर्भय नारायण राय की पुस्तक , अटल बिहारी वाजपेई का विदेश मंत्री से प्रधानमंत्री तक का एक ऐतिहासिक अध्ययन 2015 , इसमें वाजपेई जी के व्यक्तिगत और राजनीतिक जीवन का अध्ययन किया गया है विशेषकर वाजपेई जी के विदेश मंत्री से प्रधानमंत्री तक के उनके राजनीतिक सफर के दौरान उतार–चढ़ाव पर बल दिया गया है साथ ही भाजपा के गठन में उनके योगदान का उल्लेख किस पुस्तक में मिलता है।

2– डॉ दीपक सिंह की पुस्तक, इंडियन फॉरेन पॉलिसी , साउथ एशिया विद स्पेशल रेफरेंस टू पीएम अटल बिहारी वाजपेई 2008 , डॉ दीपक सिंह द्वारा इस पुस्तक ने वाजपेई जी के राजनीति में प्रवेश तथा विदेश नीति संबंधी विचारों का उल्लेख किया गया है तथा प्रधानमंत्री के रूप में वाजपेई जी की अंतरराष्ट्रीय राजनीति से संबंधों का उल्लेख भी किया गया है विशेषकर बाजपेई जी के दक्षिण एशिया के संबंध में विदेश नीति को शामिल किया गया है ।

3– श्रीमती आशा सिंह की पुस्तक, अटल बिहारी के वैचारिक और सृजनात्मक साहित्य का युगबोध की दृष्टि से अध्ययन , 2010 इस पुस्तक में अटल बिहारी वाजपेई जी के काव्य में युगबोध का उल्लेख किया गया है तथा बाजपेई के गद्य साहित्य में युगबोध के आयामों के साथ–साथ उनके पत्रकारिता साहित्य में योग बोध के आयामों

का वर्णन भी किया गया है वाजपेई जी की कविताओं में राष्ट्रीय भावना के तत्व जीवन मूल्यों के प्रति आस्था एवं सुधारवादी मनोवृत्ति को उजागर किया गया है ।

4– राजेश कुमार पांडे की पुस्तक, एलिमेंट्स ऑफ रोमांटिसिजम हिंदी पोएट्री को पंडित अटल बिहारी वाजपेई, 2011 इसमें राजेश कुमार पांडे के द्वारा अटल बिहारी वाजपेई के जीवन काल के परिचय के साथ–साथ उनकी कविताओं का उल्लेख किया गया है इस पुस्तक ने वाजपेई जी की काव्य रचनाओं का विश्लेषण किया गया है उनकी रचनाओं में स्वच्छंदतावाद के तत्वों का उल्लेख किया गया है ।

5– डॉ पवन गुप्ता की पुस्तक, भारत पाक के संबंध में श्री अटल बिहारी वाजपेई का दृष्टिकोण से देख विश्लेषणात्मक अध्ययन, 2008 इस पुस्तक में विदेश नीति के अर्थ निर्धारक तत्वों का उल्लेख करने के साथ–साथ पवन गुप्ता जी द्वारा विदेश नीति के संबंध में अटल बिहारी वाजपेई की अंतरराष्ट्रीय राजनीति में विशेष रूचि इस पुस्तक में वाजपेई जी को विदेश मंत्री के रूप में ही विपक्ष के रूप में प्रधानमंत्री के रूप में वर्णित किया गया है।

6– श्रद्धा चौहान की पुस्तक , भारत अमेरिका संबंध श्री अटल बिहारी वाजपेई के प्रधानमंत्री तो वह काल के विशेष संदर्भ में, 2006 इस पुस्तक में श्रद्धा चौहान जी ने भारत अमेरिकी संबंध की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के साथ–साथ भारत अमेरिकी संबंधों के विकास का उल्लेख भी किया है बिल क्लिंटन की भारत यात्रा के पश्चात वाजपेई द्वारा की गई अमेरिका यात्रा का उल्लेख भी किया गया है।

7. कु0 मालती का शोध प्रबन्ध प्रधानमंत्री के रूप में अटल बिहारी वाजपेयी एवं मनमोहन सिंह का तुलनात्मक अध्ययन 2014– इस शोध प्रबन्ध मे कु मालती जी ने भारतीय संसदीय व्यवस्था का स्वरूप तथा प्रधानमंत्री पद की भूमिका का वर्णन किया है इस शोध प्रबन्ध में प्रधानमंत्री के रूप में वाजपेयी जी के और डॉ मनमोहन सिंह जी के कार्यो तथा भूमिका का मूल्यांकन किया गया है तथा साथ ही उनके कार्यो का तुलनात्मक अध्ययन भी किया गया है।

8. पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी की पुस्तक, मेरी संसदीय यात्रा– में वाजपेयी जी के स्वतंत्रता से सम्बन्धित विचारो का उल्लेख किया गया है। इस पुस्तक में वाजपेयी जी के राष्ट्रीय एकता और पंथनिरपेक्षता, भ्रष्टाचार, बेरोजगारी समस्या, महिलाओ के लिये आरक्षण नौकरियो मे आरक्षण तथा आर्थिक और सामाजिक स्वतंत्रता के साथ–साथ पोखरण में किये गये परमाणु विस्फोट पर उनके विचारो का उल्लेख मिलता है।

9. अटल बिहारी वाजपेयी की पुस्तक क्या खोया क्या पाया सम्पादन कन्हैयालाल नन्दन 2016– इस पुस्तक में वाजपेयी जी का मानना है कि साहित्य और राजनीति के अलग–अलग खाने नही है जब कोई साहित्यकार राजनीति करेगा तो वह अधिक परिष्कृत होनी चाहिए। इस पुस्तक में वाजपेयी जी की कविताओ का वर्णन किया गया है।

10. उल्लेख एन.पी. की पुस्तक वाजपेयी एक राजनेता के अज्ञात पहलू 2018 हिन्दी अनुवादः महेन्द्र नारायण सिंह यादव– इस पुस्तक में वाजपेयी के जीवन का विश्लेषण करते हुये स्वतंत्र भारत की राजनीति के सात से ज्यादा दशको का शानदार विवरण लिखा है। यह पुस्तक इसलिये भी खास है क्योकि इसमे अधिक व्यवस्थित रूप में बताया गया है कि भाजपा के सामाजिक, वैचारिक और भौगोलिक आधार के विस्तार में वाजपेयी जी के सबको साथ लेकर चलने के प्रयास बहुत बड़े कारक है जबकि मे जानकारी में अन्य किताबो मे ऐसा नही दिया गया है।

11. विजय त्रिवेदी की पुस्तक हार नही मानूंगा (एक अटल जीवन गाथा) 2016– विजय त्रिवेदी जी की वाजपेयी जी के जीवन पर लिखि खुली किताब है जिसका हर पन्ना जिन्दगी एक एक पाठ, एक सबक सिखाता है। इसमे वाजपेयी जी के पचास साल के राजनीतिक और संसदीय जीवन को एक पुस्तक में समेटा गया है त्रिवेदी स्वयं लम्बे समय तक राजनीतिक पत्रकारिता करते रहे है और उन्होने बीजेपी और वाजपेयी जी को काफी करीब से समझा है।

12. अटल बिहारी वाजपेयी की पुस्तक कैदी कविराय की कुण्डलिया 1977– इस पुस्तक में अटल जी को एक कवि के रूप में चित्रित किया गया है तथा वाजपेयी जी की कविताओ के माध्यम से उनके राष्ट्रवाद, राजनीति मे उनकी भूमिका सामाजिक एक के पहलू उजागर किये गये है। साथ ही आपातकाल के दौरान उनकी लिखी हुई कविताओ का वर्णन भी इस पुस्तक मे किया गया है।

शोध अध्ययन की आवश्यकता व महत्व– भारत में समय–समय पर अनेक प्रधानमंत्रियों पर शोध कार्य होते रहे हैं परंतु अटल बिहारी वाजपेई जी पर बहुत कम शोध कार्य हुए हैं बाजपेई जी एक सामान्य मध्यम वर्गीय परिवार के रहने वाले थे जिंदगी समाज सेवा की लगन उच्च व्यक्तित्व के कुशल नेतृत्व ईमानदारी धैर्य रतन लोकतंत्र के प्रति

पूर्ण आस्था बेदाग चरित्र ने पार्टी के सर्वोच्च पद पर आसीन किया और वे भारत जैसे विश्व के सर्वाधिक बड़े लोकतंत्र के तीन बार प्रधानमंत्री तक बने परंतु कभी भी रत्ती भर लालच उनकी सोच में नहीं आया वर्तमान भारतीय राजनीति में जहां नोट के बदले वोट की राजनीति को प्रश्रय दिया जाता है वही वाजपेई जी ने सदन में विश्वास मत हासिल करते समय मात्र 1 सदस्य की कमी के कारण अपनी प्रधानमंत्री की कुर्सी का त्याग कर भारतीय लोकतंत्र में एक मिसाल कायम कर दी बाजपेई जी ने प्रधानमंत्री के रूप में जहां पोखरण परमाणु परीक्षण कर भारतीय गरिमा को पुनर्स्थापित किया वहीं पड़ोसी देशों के साथ संबंधों में मधुरता लाने तथा आर्थिक विकास पर भी जोर दिया

मेरे द्वारा बाजपेई जी पर हुए शोध कार्यों से संबंधित साहित्य के पुनरावलोकन से मुझे कुछ रिसर्च गैप का पता चला कि वाजपेई जी के प्रधानमंत्री कार्यकाल में उनके द्वारा किए गए कार्यों तथा उनके द्वारा चलाई गई योजनाओं नीतियों के संबंध में बहुत कम शोध हुए हैं और जो गिने–चुने शोध हुए भी है वह वाजपेई जी प्रधानमंत्री कार्यकाल में किए गए कार्य योजना पर केंद्रित न होकर उनकी विदेश नीति से संबंधित ज्यादा है वाजपेई जी पर अधिकतर शोध पड़ोसी राज्यों से संबंध के विषय में हुए हैं अतः मेरा शोध भारत के तीन बार प्रधानमंत्री बनने वाले अटल बिहारी वाजपेई जी के उनके प्रधानमंत्री के रूप में किए गए महत्वपूर्ण कार्यों तथा उपलब्धियों का विश्लेषण के बारे में है साथ ही वाजपेई जी के प्रधानमंत्री रहते हुए अनेक ऐसी घटनाएं भी हुई जिनके लिए उनकी काफी आलोचना भी की गई जैसे गुजरात दंगे पुरानी पेंशन योजना आदि इन सभी घटनाओं के संबंध में वाजपेई जी की भूमिका का विश्लेषण करना और उनका मूल्यांकन करना मेरे शोध का विषय है ।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. आज तक ये था वाजपेयी का सबसे मुश्किल फैसला, कंधार में छोड़ने पड़े थे 3 आतंकी, परवेज सागर, 17 अगस्त 2018.

2. ABP, 2001 के संसद हमले के दौरान, नीरज सिंह, 17 अगस्त 2018.

3. अमर उजाला, जब 3 दिन मैदान–ए–जंग मे डटे रहे अटल बिहारी वाजपेयी, मोहित धुपड़, 17 अगस्त 2018.

4. आज तक, अटल बिहारी वाजपेयीः जिन्होने BJP को सत्ता के शिखर पर पहुचाया, कुबूल अहमद, 12 जून 2018.

5. अमर उजाला, अटल की ये कविताये दिल जीत लेगी आपका 17 अगस्त 2018.

6. BBC, NEWS हिन्दी, अटल बिहारी वाजपेयी के 10 फैसले, प्रदीप कुमार 25 दिसम्बर 2018.

7. BBC, NEWS हिन्दी, अटल बिहारी वाजपेयी का निधन युग का अन्त 16 अगस्त 2018.

8. निर्भय नारायण राय, अटल बिहारी वाजपेयी विदेश मंत्री से प्रधान मंत्री तक एक ऐतिहासिक अध्ययन, 2015.

9. दीपक सिंह इण्डियन फॉरेन पॉलिसी टु साउथ एशिया विद स्पेशल रेफरेन्स टु पी.एम. अटल बिहारी वाजपेयी, 2008.

10. जागरण, अटल बिहारी वाजपेयी.

11. JAGRAN JOSH पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी की उपलब्धिया, शिखा गोयल, 2019.

12. राजेश कुमार पाण्डेय, अटल बिहारी वाजपेयी की कविता में स्वच्छतावाद के तत्व 2019.

13. डॉ पवन गुप्ता, भारत पाक के सम्बन्ध में श्री अटल बिहारी वाजपेयी का दृष्टिकोण एक विश्लेषणात्मक अध्ययन 2008.

14. श्रद्धा चौहान, भारत–अमेरिका सम्बन्धः श्री अटल बिहारी वाजपेयी के प्रधानमंत्रित्व काल के विशेष सन्दर्भ मे 2006.

15. सतीश कुमार, गठबंधन की राजनीति मे अटल बिहारी वाजपेयी की भूमिका 2018.

16. The Lallantop, वाजपेयी के वो पांच बड़े फैसले 25 दिसम्बर 2018.

17. M.Economictimes.com वाजपेयी जी की नीतियो से ऐसे बढी थी अर्थव्यवस्था की ग्रोथ, 17 अगस्त 2018.

18. Money. Bhasker.com 16 अगस्त 2018.

19. News click पेंशन सत्याग्रह 21 नवम्बर 2019.

20. जनसत्ता, दूसरी नजर वे गरीबो को एजेंडो पर ले आई पी चिंदबरम, 26 नवम्बर 2017.

21. द वायर, हमे वाजपेयी के बिना मुखौटे वाले असली चेहरे को नही भूलना चाहिये, सिद्धार्थ वर दराजन, फरवरी 2019.

22. दैनिक भास्कर, जब भारत–पाक ने शुरू की थी दिल्ली– लाहौर बस, 5 वर्ष पहले.

23. m.patrika.com 2001 मे संसद पर हमले के दौरान जब सोनिया ने अटल जी का हालचाल लिया, मोहित सक्सेना 17 अगस्त 2018.

24. Satyagrah. Scroll.in, अटल बिहारी वाजपेयी से जुडे दो दावे जो उन्हे हमेशा परेशान करते रहे दुष्यंत कुमार, 18 अगस्त 2018.

25. प्रभाव साक्षी, काल के कपाल पर लिखते मिटाने वाली आवाज थे अटल बिहारी वाजपेयी, 16 अगस्त 2019.

26. newsnation tv.com जब अटल बिहारी वाजपेयी ने कारगिल युद्ध के दौरान बांध दिये थे सेना के हाथ, साकेत नंद ज्ञान, 16 अगस्त 2018.

27-M.economictimes.com, वाजपेयी के इन 5 कदमो से मजबूत हुई अर्थव्यवस्था 17 अगस्त 2018

वदमपदकपंीपदकप कारगिल की जंग के समय अटल बिहारी वाजपेयी ने अमेरिका से कहा विश्व के नक्शे से गायब हो जायेगा। पाकिस्तान, रीचा, 17 अगस्त 2018.